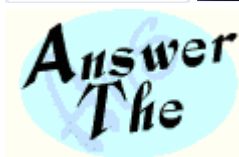


चैनल

- राशिफल
- ? ज्योतिष संस्था *नया*
- ? ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट दूँडिए

आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं



[पिछले माह के परिणाम](#)

गृहारंभ हेतु नींव (खात) के मुहूर्त

डॉ. भोजराज द्विवेदी

ग्रेजी में एक कहावत है: Well Begun Half Done. यदि काम सही मुहूर्त में शुरू कर दिया जाए, तो पूरा होने में देर नहीं लगती। नींव का मुहूर्त सही हो, तो मकान फटाफट बन जाता है। इसलिए सबसे पहले भूमि शयन पर विचार करना चाहिए।

भूमि शयन विचार एवं वत्स चक्र : सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा का नक्षत्र यदि 5-7-9-12-19-26 वां पड़े, तो भूमि को सुप्त माना जाता है। इन नक्षत्रों में बावड़ी, तालाब या गृह निर्माणादि के लिए भूमि का खोदना वर्जित है।

गृहारंभ के नक्षत्रानुसार वृष वास्तु आदि चक्रों में भी शुभाशुभ की परीक्षा की जाती है। यहां वत्स (वृष) चक्र बताया जा रहा है। यह राज मार्तंड में उल्लिखित है।

वृषभाकार मान कर निम्न प्रकार से सूर्य के नक्षत्र की स्थापना करनी चाहिए:

इस प्रकार शुभ समय देख कर गृह निर्माण करना चाहिए।

वृष चक्र							
स्थान	पक्षक	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पीठ	दक्षिण कोडा	बाप कोडा	पूछ
नक्षत्र	3	4	4	3	4	4	3
फल	अग्नि	उद्विग्नता	स्थिरता	धन	विजय	निर्भरता	स्वाप्ती
	भय					नाश	पीडा

नींव प्रारंभ करने हेतु शुभ काल :

बृहस्पति युक्त पुष्य नक्षत्र, तीनों उत्तरा, रोहिणी, श्रवण, आश्लेषा, इन नक्षत्रों में गुरुवार के दिन प्रारंभ किया हुआ गृह पुत्र और राज्य देने वाला कहा गया है।

अश्विनी, चित्रा, विशाखा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्र के साथ यदि शुक्रवार हो, तो उस दिन किया गया नींव का मुहूर्त धन-धान्य देने वाला एवं शुभ होता है।

अश्विनी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा और हस्त नक्षत्रों में बुधवार के दिन प्रारंभ किया हुआ घर सुख, संपन्नता और पुत्रों को देने वाला होता

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी


.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन](#)
[पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



•  **जोड़िए** हमारी
साइट को अपने
Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित
लियो गोल्ड, विंडोज पर
आधारित जन सामान्य के
प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण
ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है।
और

है।

गुरुः शुक्राक्रचंद्रेषु स्वोच्यादि बलशालिषु।

गुर्वकेंदुबलं लब्धवा गृहारंभ प्रशस्यते।।



—ज्योतिष तत्व प्रकाश/श्लोक61/पृष्ठ421

जब गुरु, शुक्र, सूर्य तथा चंद्रमा अपने उच्च स्थान में हों, बलवान हों, तो गुरु, सूर्य तथा चंद्रमा का बल ले कर गृहारंभ करना शुभ फलदायक होता है।

लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

नींव प्रारंभ के समय मेष का सूर्य प्रतिष्ठादायक, वृष का सूर्य धन वृद्धि कारक, कर्क का शुभ, सिंह हो तो नौकर-चाकर में वृद्धिकारक, तुला का सूर्य सुखदायक, वृश्चिक में धन वृद्धिकारक, मकर का सूर्य धनदायक तथा कुंभ का सूर्य रत्न लाभ देता है।

गृहारंभ में स्थिर या द्विस्वभाव लग्न होना चाहिए, जिसमें शुभ ग्रह बैठे हों, या लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो।

महर्षि पाराशर के अनुसार चित्रा, शतभिषा, स्वाति, हस्त, पुष्य पुनर्वसु, रोहिणी, रेवती, मूल, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, धनिष्ठा, उत्तरायणा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा और अनुराधा नक्षत्रों में जो मनुष्य वास्तु पूजन करता है, उसको लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

वास्तुपूजनमेतेषु नक्षत्रेषु करोति यः।

समाप्नोत नरो लक्ष्मीमिति प्राह पराशरः।।

गृह निर्माण काल : कुंडली में गुरु, शुक्र, सूर्य तथा चंद्रमा में से कोई भी तीन ग्रह उच्च के, या स्वगृही हों, दसवें स्थान में बुध हो, लग्न में सूर्य, गुरु, शुक्र, या चंद्र स्वगृही या उच्च हों, तो ऐसे घर की आयु दो सौ वर्ष की होती है तथा उस घर में चिरकाल तक लक्ष्मी का निवास रहता है।

निषिद्ध वचन :

- रवि और मंगल को गृहारंभ न करें।
- मेष, कर्क, तुला और मकर लग्न में गृहारंभ न करें।
- गृहारंभ काल की कुंडली बनाएं। उसमें तीसरे, छठे और ग्यारहवें स्थान में पाप ग्रह हो, तो गृहारंभ न करें।
- गृह कुंडली में छठे, आठवें तथा बारहवें में शुभ ग्रह हो, तो गृहारंभ न करें।

- मंगल युक्त हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढा और मूल, इन नक्षत्रों को यदि मंगलवार हो, तो उस दिन प्रारंभ किया गया घर अग्नि भय, चोरी एवं पुत्र क्लेश देने वाला होता है।

- शनेश्चर युक्तकक पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाति और भरणी, इन नक्षत्रों में शनिवार के दिन प्रारंभ किया हुआ घर राक्षसों और भूतों से युक्त रहता है।

- गृहारंभ के दिन सूर्य निर्बल, अस्त या नीचे स्थान में हो, तो घर के स्वामी का मरण होता है।

- गृह निर्माण के दिन चंद्रमा निर्बल, अस्त, या नीचे का हो, तो गृह निर्माण करने वाले की स्त्री का मरण होता है।

- गृह प्रारंभ के दिन बृहस्पति निर्बल, अस्त या नीचे स्थान में हो, तो धन का नाश होता है।

- रिक्ता तिथि 4/9/14 को गृहारंभ न करें।

- नींव प्रारंभ काल में मिथुन का सूर्य मृत्यु देने वाला होता है और कन्या का सूर्य रोग भय देता है।

- गृहारंभ सिंह लग्न में वर्जित है।

- मिथुन, कन्या, धनु और मीन के सूर्य में नवीन गृह का निर्माण न करें।

देव प्रतिष्ठा विचार

उत्तरायण सूर्य में शुक्र, गुरु और चंद्रमा के उदित रहने पर जलाशय, बाग-बगीचा या देवता की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्रतिपदा रहित शुक्ल पक्ष सर्वत्र ग्राह्य है। लेकिन कृष्ण पक्ष में भी पंचमी तक प्रतिष्ठा हो सकती है।

लेकिन अपने मास, तिथि आदि में दक्षिणायन में भी, प्रतिष्ठा का विधान है, जैसे आश्विन मास नवरात्र में दुर्गा की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में श्री कृष्ण की, चतुर्दशी तिथि में सर्वदा शिव जी की स्थापना सुखद है। इसी प्रकार उग्र प्रकृति देवता, यथा भैरव, मातृका, वराह, महिषासुर मर्दिनी आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है।

मातृभैरववाराह नार सिंहत्रि विक्रमाः।

महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

—वेखानस संहिता

यद्यपि मल मास सर्वत्र प्रतिष्ठा में वर्जित है, लेकिन कुछ विद्वान् पौष में भी सब देवताओं की प्रतिष्ठा शुभ मानते हैं।

श्रावणे स्थापयेल्लिगमाश्विने जगदंबिकाम्।

मार्गशीर्ष हरिं चैव सर्वात्पौषेअपि केचन।।

—मुहूर्त गणपति

आचार्य बृहस्पति पौष मास में सब देवों की प्रतिष्ठा को राज्यप्रद मानते हैं।

तिथियों के विषय में ज्ञातव्य है कि रिक्ता, अमा तथा शुक्ल प्रतिपदा को छोड़ कर, सब तिथियां एवं देवताओं की अपनी तिथियां विशेष शुभ हैं।

—बृहस्पति

यदिदनं यस्य देवस्य तदिदने तस्य संस्थितिः।

—वशिष्ठ संहिता

मंगलवार को छोड़ कर शेष वारों में यजमान, चंद्र और सूर्य बल शुद्ध होने पर स्थिर या द्विस्वभाव लग्न में, स्थिर नवांश में, लग्न शुद्धि कर के विहित प्रकार से विधानपूर्वक स्थापना करें। प्रतिष्ठा में थोड़ी अशुद्धि कष्टों को जन्म देती है।

श्रियं। लक्षणहीना तु न प्रतिष्ठा समो रिपुः।।

—वशिष्ठ संहिता

इस प्रकार मध्याह्न तक हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रावण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रों में, बलवान् लग्न में, अष्टम राशि, लग्न को छोड़ कर, प्रतिष्ठा का मुहूर्त बताया जाता है।

देव स्थापना के विशेष लग्न :

स्थाप्यों हिरिर्दिन करो मिथुने महैशो।

नारायणश्च युवतौ घटके विधाता।।

देव्यो द्विमृत्तं भवनेषु नि वेशनीयाः।

क्षुद्राश्चरे स्थिरगृहै निलिखलाश्चः देवाः।।

मिथुन लग्न में विष्णु, महादेव तथा सूर्य की स्थापना करनी चाहिए।
कन्या लग्न में कृष्ण की, कुंभ लग्न में ब्रह्मा की, द्विस्वभाव लग्नों में

देवियों की स्थापना करनी चाहिए। चार लग्नों में योगिनियों की और स्थिर लग्नों में सर्व देवताओं की स्थापना करना शुभ है।

लिंग स्थापन तु कर्त्तव्यं शिशिरादावृतुत्रये।

प्रावृषि स्थापित लिंग भवेद् वरयोगदम्।

हेमन्ते ज्ञानदं चैव शिशिरे सर्वभूतिदम्।

लक्ष्मीप्रदं वसन्ते च ग्रीष्मे च लिंगसयारोपणमतम्॥

यतीनां सर्वकाले च लिंगसयारोपणमतम्॥

श्रेष्ठोत्तरे प्रतिष्ठा स्याउयनेमुक्ति मिच्छताम्॥

दक्षिणे तु मुमुक्षूणां मलमासे न सा द्वयोः॥

माघ, फाल्गुन—वैशाख—ज्येष्ठाषाढेषु पंचसु।

प्रतिष्ठा शुभदाप्रोक्ता सर्वसिद्धिः प्रजायते॥

श्रावणे च नभस्ये च लिंग स्थापनमुत्तमम्।

देव्याः माघाश्विने मासेअप्युत्तमा सर्वकामदा॥

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ तथा आषाढ़ महीनों में शिव जी की प्रतिष्ठा सब प्रकार से सिद्धि देने वाली कही गयी है। श्रावण महीना भी शुभ है। ऋतुओं की दृष्टि से हेमन्त ऋतु में शिव लिंग की स्थापना से यजमान और भक्तों को विशेष ज्ञान की प्राप्ति होती है। शिशिर में शुभ, किंतु बसन्त ऋतु में शिव मंदिर की प्रतिष्ठा विशेष धनदायक साबित होती है, जबकि ग्रीष्म ऋतु में यह प्रतिष्ठा शांति, शीतलता और विजय प्रदाता कही गयी है। इस प्रकार भगवती जगदंबा की प्रतिष्ठा माघ एवं आश्विन में सर्वश्रेष्ठ फल देने वाली उत्तम कही गयी है।

चैत्रे वा फाल्गुने मासे ज्येष्ठे वा माघवे तथा।

माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा सिते।

रिक्तान्य तिथिषु स्यात्सवारे भौमान्यके तथा॥

हैमाद्रि के कथानुसार :

विष्णु प्रतिष्ठा माघे न भवति।

माघे कर्तुः विनाशः स्यात्।

फाल्गुने शुभदा सिता॥

देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त :

सर्वदेवताओं की प्रतिष्ठा चैत्र, फाल्गुन, ज्येष्ठ, वैशाख और माघ मास में करना शुभ है।

श्राविणे स्थापयेल्लिंग आश्विनै जगदंबिकाम्।

मार्गशीर्ष हरि चैव, सर्वान् पौषेअपि केचन्।।

—मुहूर्तगणपति

श्रावण में शंकर की स्थापना करना, आश्विन में जगदंबा की स्थापना करना, मार्गशीर्ष में विष्णु की स्थापना करना और पौष मास में किसी भी देवता की स्थापना करना शुभ है।

हस्त्र, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठ मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी एवं मृगशीर्ष में सभी देवताओं की, खास कर देवी की प्रतिष्ठा शुभ है।

यदिदनं यस्य देवस्य तदिदने संस्थितिः।

—वशिष्ठ संहिता

जिस देव की जो तिथि हो, उस दिन उस देव की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। शुक्ल पक्ष की तृतीया, पंचमी, चतुर्थी, षष्ठी, सप्तमी, नवमी, दशमी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी एवं चतुर्दशी देवी कार्य के लिए सब मनोरथों को देने वाली हैं। शुक्ल पक्ष में और कृष्ण पक्ष की दसवीं तक प्रतिष्ठा शुभ रहती है। इसी प्रकार, शनि, रवि एवं मंगल को छोड़ कर, अन्य सभी वारों में यज्ञ कार्य एवं देव प्रतिष्ठा शुभ कहे गये हैं।

FuturePointIndia.com के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)